पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य :

वैश्विक मुद्दे, चुनौतियाँ और रणनीतियाँ

(Environment and Human Health :

Global Issues, Challenges and Strategies)

पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य :

वैश्विक मुद्दे, चुनौतियाँ और रणनीतियाँ

(Environment and Human Health :

Global Issues, Challenges and Strategies)

Editor:

Dr. Dinesh Kumar

Assistant Professor

Department of Geography

Faculty of Arts, Crafts & Social Sciences

Tantia University, Sri Ganganagar (Rajasthan)

2024

Siddhi Vinayak Publications

प्रकाशक

सिद्धि विनायक पब्लिकेशन्स
कुलचन्द्र, हनुमानगढ (राजस्थान) 335526
94611-09470, 83063-09470
publicationssiddhivinayak@gmail.com

ISBN : 978-81-965118-6-9

© संपादक

प्रथम संस्करण (2024)

मूल्य : ₹ 1225.00

शब्द संयोजक एवं डिजाइन : कमल जीत सिंह (तकनीकी सहायक)

मुद्रक : Ican Technosolutions

वैधानिक चेतावनी

- पुस्तक प्रकाशन में पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि, कमी अथवा लोप का रह जाना संभव है। अतः किसी भी त्रुटि, कमी एवं लोप के कारण क्षति अथवा क्लेश के लिए संपादक, लेखक, प्रकाशक, वितरक अथवा मुद्रक का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा।
- शोध आलेख/चैप्टर/अध्याय में दिए गए विचार लेखकों/शोधकर्त्ताओं के अपने हैं। इसके लिए प्रकाशक/संपादक जिम्मेदार नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र हनुमानगढ, राजस्थान ही होगा।
- इस पुस्तक का प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना पुनः प्रकाशन/फोटो कॉपी/स्केल इत्यादि माध्यमों से पुनर्मुद्रण करना कॉपीराइट अधिनियम के अनुसार दंडनीय अपराध है।

CH. No.	**Title** **Contributor**	Pages
	भूमिका	(vii) - (viii)
1	Groundwater Resources Assessment: Use and Conservation (A Study of Surguja District, Chhattisgarh State) **Dr. Anil Kumar Sinha**	1-15
2	India's Environmental Movements: An Overview **Dr. Sandeep Kumar, Dr. Mohinder Kumar**	16-32
3	Waste-to-Wealth: Indian Innovative Methodologies in Resource Utilization **Dr. Ajay Tiwari**	33-58
4	Environmentalists and Their Movements in India: An Overview **Dr. Vinod Khuriwal, Dr. Dinesh Kumar**	59-70
5	पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य : एक भौगोलिक विश्लेषण **डॉ. पूनम मेहता**	71-78
6	मानव स्वास्थ्य और वायु प्रदूषण : एक गंभीर चिंतन **Dr. Urmila Sabharwal**	79-88
7	जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर प्रभाव **डॉ. रामदिया, डॉ. दिनेश कुमार**	89-94
8	राजस्थान के वन संसाधन, जैव विविधता एवम् संरक्षण **डॉ. कामना भटनागर**	95-108
9	पर्यावरण और पारिस्थितिकी दृष्टि में दुर्गम क्षेत्रों की अनुसूचित जनजातियाँ **डॉ. धीरेन्द्र सिंह, प्रो. (डॉ.) प्रेम प्रकाश राजपूत, प्रो. डी.एन. बाजपेई**	109-118
10	पर्यावरण संरक्षण एवं समाधान हेतु प्रयास **डॉ. जगत सिंह कठायत**	119-124

11	साहित्य और पर्यावरण चेतना **डॉ. पूजा तनेजा**	125-130
12	पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में भारतीय संवैधानिक दृष्टिकोण **डॉ. लक्ष्मी शर्मा**	131-139
13	भारत में मानव संसाधन एवं उसकी समस्याओं का एक अध्ययन **नरेन्द्र कुमार**	140-147
14	प्लास्टिक के हाथों में दुनिया **ESWARI. A**	148-154

भूमिका

पर्यावरण और स्वास्थ्य का अन्योन्याश्रित संबंध है। यदि पर्यावरण स्वच्छ है, तो स्वास्थ्य भी उत्तम होगा। पर्यावरण प्रदूषण स्वास्थ्य को सीधे तौर पर प्रभावित करता है। मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण के बीच संबंध जटिल, गतिशील, बहुआयामी और वैश्विक है। बढ़ती आबादी के लिए खाने-पीने की व्यवस्था एक वैश्विक समस्या बन चुकी है। पृथ्वी पर दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है, परिणामस्वरुप यह दबाव जंगलों पर आ रहा है और वह कटते जा रहे हैं। खेती और आवासीय जमीन की माँग लगातार बढ़ रही है, जिसकी पूर्ति जंगल अपना बलिदान देकर कर रहे हैं। ज्वालामुखी विस्फोट, भूकंप, बाढ़, तूफान आदि कुछेक प्राकृतिक कारणों को छोड़ दें तो पर्यावरण के विघटन और ह्रास के सभी कारण मानव जनित हैं। आज के परिप्रेक्ष्य में स्वास्थ्य सेवाओं में वृद्धि के साथ-साथ पर्यावरणीय पहलुओं में निवेश करना न केवल मानव जाति वरन् संपूर्ण पृथ्वी के लिए परमावश्यक है। विकासशील देशों की बढ़ती आबादी, विकसित राष्ट्रों का बढ़ता औद्योगिकरण और घटते जंगल पर्यावरणीय रुग्णता के अहम् कारक हैं। अतिभौतिकता ने हमारी जीवन शैली के साथ-साथ पर्यावरण को भी दूर तक प्रभावित किया है, कोरोना महामारी इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। मनुष्य जैसे-जैसे विकास की सीढ़ियाँ चढ़ता जा रहा है वैसे-वैसे ही पर्यावरणीय मुद्दे गौण होते जा रहे हैं। वैश्विक तापन के लिए शेष विश्व यूरोप और अमेरिका को सदा से ही दोषी ठहरते आ रहा है लेकिन हालिया कुछ सालों में चीन ने इसमें लंबी छलांग लगाई है, परंतु वह इस सच को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। अब यूरोप, अमेरिका

और चीन शेष विश्व को ही इसमें सबसे बड़ा जिम्मेदार मान रहे हैं। विकासशील देशों के द्वारा खुद को विकसित करने के लिए अपनी प्राकृतिक संसाधनों का अनौचित्यपूर्ण दोहन करने से पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन और बढ़ते वैश्विक तापन से जलवायु परिवर्तन, महासागरीय जल में वृद्धि, फसल चक्र में परिवर्तन जैसे अनेक परिवर्तन हमारे सामने बड़ी चुनौती बनकर खड़े हैं। ऐसा नहीं है कि विश्व को पर्यावरण की चिंता नहीं है या उसके लिए प्रयास नहीं हो रहे। लेकिन जो चिंता है या जो प्रयास किया जा रहे हैं वह भविष्य की चुनौती को देखते हुए नाकाफी है। यूनाइटेड नेशंस फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑफ क्लाइमेट चेंज की रिपोर्ट के अनुसार आने वाले कुछ वर्षों में तुवालु, मालदीप, फिजी, पलाऊ, माइक्रोनेशिया जैसे द्विपीय देशों का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

इन मुद्दों, चुनौतियों को रणनीतियों के साथ देश दुनिया के सामने रखना इस पुस्तक का अभीष्ट है। पुस्तक में अनेक शोधार्थियों ने सतत् प्रयास कर उन चुनौतियों को रेखांकित करने का प्रयास किया है जो आज इस पृथ्वी को निगलने के लिए खड़ी है। इसके साथ-साथ आपके सुझाव वैश्विक चुनौती का सामना करने में महती भूमिका निभाएंगे।

आप सभी के प्रयासों के लिए हृदय से मंगल भावनाएं।

दिनांक: 17.01.2024 *डॉ. दिनेश कुमार*